E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

ज्योतिष वेदाङ्ग

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।

तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्यौतिषं मूर्ध्नि संस्थितम्।।

अर्थात् जिस प्रकार मयूरों की शिखा उनके शिरोदेश में स्थित रहती है और जिस प्रकार नागों की मणियाँ भी उनके सिरस्थ देश में रहती है, उसी प्रकार वेदाङ्गों में ज्योतिषशास्त्र सबसे ऊपर स्थित है।

वेदाङ्गों में ज्योतिष छठा और अन्तिम वेदाङ्ग है। जिस प्रकार व्याकरण वेदपुरुष का मुख है, उसी प्रकार ज्योतिष को उसका नेत्र कहा गया है-'ज्योतिषामयनं चक्षुः'। नेत्रों के बिना जिस प्रकार कोई मनुष्य स्वयमेव एक पैर भी नहीं चल सकता, उसी प्रकार ज्योतिषशास्त्र के बिना वेदपुरुष में अन्धता आ जाती है।

ज्योतिष वह विद्या या शास्त्र है जिसमें आकाश में स्थित ग्रह, नक्षत्र आदि की गति, परिमाण, दूरी आदि का निश्चय किया जाता है। नभमण्डल में स्थित ज्योतिः (ग्रह-नक्षत्र) सम्बन्धी विविधविषयक विद्या को ज्योतिर्विद्या कहते हैं और जिस शास्त्र में उसका उपदेश या वर्णन रहता है, वह ज्योतिषशास्त्र कहलाता है-**'ज्योतिषां सूर्यादिग्रहाणां बोधकं शास्त्रं ज्योतिःशास्त्रम्'।**

'ज्योतिष' शब्द की व्युत्पत्ति 'द्युतेरिसिन्नादेश्च जः' कहकर की गई है। अर्थात् 'द्युत् दीप्तौ' धातु से इसिन् प्रत्यय तथा दकार को जकारादेश करके ज्योतिष् या ज्योतिः शब्द बना, पुनः 'अर्शआदिभ्योऽच्' से अच् प्रत्यय करके ज्योतिष अकारान्त शब्द निर्मित हुआ है। पुनः तदधिकृत्य कृतो ग्रन्थः' इस पाणिनीय सूत्र से अण् प्रत्यय करने पर ज्यौतिष शब्द निष्पन्न होता है। द्युत् मोलिक, भ्वादिगणीय तथा सेट् है। इसका अर्थ है-द्युतिमान्, प्रकाशमान, चमकना, उजला होना आदि। ज्योतिषशास्त्र की व्युत्पत्ति 'ज्योतिषां सूर्यादिग्रहाणां बोधकं शास्त्रम्' से दी गई है अतः सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रहों का बोधन कराने वाला शास्त्र ही ज्योतिषशास्त्र है-

ज्योतिः सूर्यादीनां ग्रहाणां गत्यादिकं प्रतिपाद्यतया अस्त्यस्येति अच्। वेदाङ्गशास्त्रविशेषः।

ज्योतिषशास्त्र भारतीयों की अमूल्य निधि है। यह जितना व्यापक है, उतना व्यावहारिक भी है। प्रयोगात्मक दृष्टि से वैज्ञानिकों तथा विद्वानों की गवेषणात्मक उत्कण्ठा की परितृप्ति के लिए इसमें अक्षुण्ण वस्तुभण्डार उपलब्ध है।

महर्षि पाणिनि ने ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र कहा है-'ज्योतिषायनं चक्षुः'। जैसे मनुष्य बिना चक्षु इन्द्रिय के किसी भी वस्तु का दर्शन करने में असमर्थ होता है, ठीक वैसे ही वेदशास्त्र या वेदशास्त्रविहित कर्मों को जानने कि लिए ज्योतिष का अन्यतम महत्त्व सिद्ध है। भूतल, अन्तरिक्ष एवं भूगर्भ के प्रत्येक पदार्थ का त्रैकालिक यथार्थ ज्ञान जिस शास्त्र से हो, वह ज्योतिषशास्त्र है। अतः ज्योतिष ज्योति का शास्त्र है। वेद के अन्य अङ्गों की अपेक्षा अपनी विशेष योग्यता के कारण ही ज्योतिषशास्त्र वेदभगवान् का प्रधान अङ्ग-निर्मल चक्षु माना गया है और इसका अन्य कारण यह भी है कि भविष्य जानने की इच्छा सभी युगों में मनुष्यों के मन में सर्वदा प्रबल रहती है, जिसकी परिणति यह ज्योतिषशास्त्र है।

नेत्र का कार्य है सम्यक् अवलोकन। यह नेत्र मानव के सामान्य नेत्र के समान नहीं है, जिसमें भ्रम-लिप्सा एवं प्रमाद आदि के कारण दृष्टिदोष हो जाने से यथार्थ ज्ञान भी मिथ्या प्रतीत होने लगता है, फलतः तथ्य से परे धारणा बन जाती है, किन्तु वेदपुरुष का नेत्र एक ऐसा नेत्र है, एक ऐसी दिव्यदृष्टि है, जिस दृष्टि से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और समस्त जीवनिकाय का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, व्यवहित-अव्यवहित समस्त कर्म हस्तामलकवत् स्पष्ट दृग्गोचर होने लगता है।

ज्योतिषमान आकाशीय पिण्डों का अध्ययन ही ज्योतिषशास्त्र है। अतः सृष्टि के आरम्भ में सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि के सृजन के साथ ही ज्योतिषशास्त्र के विवेच्य विषय अस्तित्व में आ गये। प्रारम्भ में यह शास्त्र वेदों के समान ही श्रुति परम्परा द्वारा संरक्षित रहा तथा कालान्तर में ज्योतिष शास्त्र से सम्बन्धित स्वतंत्र साहित्य की भी रचना हुई। वैदिक संहिताओं में उपलब्ध ज्योतिषशास्त्रीय छिटपुट उल्लेखों से लेकर ज्योतिषशास्त्रीय स्वतंत्र साहित्यों के रचना क्रम के मध्य एक लम्बी कालावधि का अवकाश रहा है। स्पष्ट है कि ज्योतिष शास्त्र की इस समृद्ध परम्परा को निश्चित होने में एक लम्बा समय

लगा है। अतः ज्योतिष साहित्य की परम्परा का अध्ययन करने के लिए संस्कृत साहित्य के विकास क्रम को ही आधार मानकर ज्योतिष साहित्य विषयक परम्परा को स्पष्ट किया जा सकता है।

समस्त लौकिक एवं पारलौकिक ज्ञान के मूल वेद स्वीकार किए गए हैं किन्तु वैदिक ऋचाएं अर्थ की दुरुहता से युक्त हैं अतः इनके अर्थ को समझने के लिए वेदाङ्गों का आविर्भाव हुआ। वेदाङ्ग संख्या में छः माने गए हैं किन्तु ज्योतिषशास्त्र इन वेदाङ्गों में सर्वाधिक रोचक विषय है क्योंकि मनुष्य जबसे इस पृथिवी पर वर्तमान मानवसदृश रूप में आया तभी से उसकी रुचि आकाश के विभिन्न रहस्यों, गतिविधियों एवं कार्यों को जानने की रही है अर्थात् नभोमण्डल में स्थित विविध ग्रह, नक्षत्र, तारा आदि मानव को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं और मानवजीवन को ये किस प्रकार प्रभावित करते हैं या जानने का एकमात्र साधन ज्योतिष ही है। इसी जिज्ञासा के समाधान हेतु इस शास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

वेद की प्रवृत्ति विशेषरूप से यज्ञ सम्पादनके लिये होती है। यज्ञ का विधान विशिष्ट काल की अपेक्षा करता है। यज्ञ-याग के सम्पादन के लिये समय शुद्धि की विशेष आवश्यकता होती है। कुछ कर्मकाण्डीय विधान ऐसे होते हैं, जिनका सम्बन्ध संवत्सर से होता है और कुछ का ऋतु से। यहाँ आशय यह है कि निश्चित रूप से नक्षत्र, तिथि, पक्ष, मास, ऋतु और संवत्सर के समस्त अंशों के साथ यज्ञ-यागके विधान वेदों में प्राप्त होते हैं। अतः इन नियमों के पालनके लिये और निश्चितरूप से निर्वाह के लिये ज्योतिषशास्त्रका ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। इसीलिये विद्वान् ज्योतिष को 'कालविज्ञापक शास्त्र' कहते हैं; क्योंकि मुहूर्त निकालकर की जानेवाली यज्ञादि- क्रिया - विशेष फलदायिका होती है। अतएव वेदाङ्ग ज्योतिष का विशेष आग्रह है कि जो मनुष्य ज्योतिष शास्त्र को अच्छी तरह जानता है, वही यज्ञ के यथार्थ स्वरूपका ज्ञान रखता है। यज्ञ की सफलता केवल समुचित विधान से ही नहीं होती, प्रत्युत उचित निर्दिष्ट नक्षत्र में और समुचित काल में प्रयोगसे ही होती है।

वेदों में कहे गए, यज्ञकर्म प्रवृत्ति के लिए, जो यज्ञादिकर्म कहे गए हैं वे काल के अधीन हैं। अतः जिस शास्त्र से काल का बोध होता है वह वेदाङ्ग है अर्थात् वह शास्त्र वेदों का अङ्ग है। ज्योतिषशास्त्र क्योंकि काल की गणना करता है, तथा काल का बोध कराता है, अतः यह वेदाङ्ग है-

वेदास्तावद्यज्ञकर्मप्रवृत्ता यज्ञाः प्रोक्तस्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतः स्याद्वेदाङ्गत्वं ज्यौतिषस्योक्तमस्मात्।।

वेदशास्त्र हमें यज्ञकर्म करने के लिए प्रवृत्त करता है। शुभकाल में यज्ञादि शुभकर्म सफल होते है तथा दूषित काल में किए गए अभीष्ट कार्य असिद्ध होते हैं। शुभाशुभ काल तथा तिथि वारादि का ज्ञान ज्योतिषशास्त्र के द्वारा होता है, अतः यह वेदों के छः अङ्गों में से एक होता है। यह भास्कराचार्य ने उक्त श्लोक में कहा है।

वेदों के सभी छः अङ्गों में चक्षु की मुख्यता होने के कारण ज्योतिषशास्त्र को इनमें मुख्य कहा गया है क्योंकि कर्ण, नासिकादि अङ्गों में यदि चक्षु न हो तो शेष अङ्गों के होने पर भी कुछ नहीं होने के तुल्य है। नेत्रों के न होने पर कोई कुछ नहीं कर सकता-

वेदचक्षुः किलेदं स्मृतं ज्यौतिषं मुख्यता चाङ्गमध्येस्य तेनोच्यते।
संयुतोऽपीतरैः कर्णनासादिभिश्चक्षुषाऽङ्गेन हीनो न किञ्चित्करः।।

वेदाङ्ग ज्योतिष का यह डिण्डिम घोष मनुष्योंको प्रेरित करता है कि-'कालाभिपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः'।

प्राचीन समय में चारों वेदों का अलग-अलग ज्योतिषशास्त्र था, उनमें अभी सामवेद का ज्योतिष उपलब्ध नहीं है, अवशिष्ट तीन वेदों के ज्योतिष प्राप्त होते हैं, वे इस प्रकार हैं- (१) ऋग्वेद-ज्योतिष- आर्च ज्योतिष, ३६ पद्यात्मक। (२) यजुर्वेद-ज्योतिष- याजुष ज्योतिष, ३९ पद्यात्मक। (३) अथर्ववेद-ज्योतिष- आथर्वण ज्योतिष, १६२ पद्यात्मक। वस्तुतः आर्च ज्योतिष और याजुष ज्योतिष में समानता ही प्रतीत होती है, क्योंकि दोनों में अनेकत्र समता है। कहीं-कहीं इतिहास में दो ज्योतिषों का ही उल्लेख मिलता है। आथर्वण ज्योतिष की चर्चा ही नहीं है। संख्या के विषय में भी मतैक्य नहीं है। याजुष ज्यौतिष की पद्य-संख्या ऊपर ३९ कही गयी है, कहीं-कहीं ४९ है। इसी प्रकार आथर्वण ज्योतिष के स्थान पर 'अथर्व ज्योतिष' यह नाम भी मिलता है।

तीन प्रकार के वेदांग ज्योतिष

ज्योतिष का स्वतन्त्र प्राचीन ग्रन्थ 'वेदांग ज्योतिष' है। यज्ञादि कर्मों के निर्वाहार्थ इसमें तिथि, पर्वकाल आदि का निरूपण है। इस समय तीन प्रकार के वेदांग ज्योतिष प्राप्त हैं- (१) लगधकृत वेदांग ज्योतिष जो प्राचीनतम है। जैसे प्राचीन वैदिक व्याकरण के आधार पर पाणिन्यादि ने अपने-अपने व्याकरण रचे; एवं वैदिक छन्दः शास्त्र के आधार पर पिंगलादिकों ने अपने-अपने छन्दः शास्त्र

रचे; वैसे ही प्राचीन वैदिक ज्योतिर्ज्ञान के आधार पर लगध ने अपना वेदांग ज्योतिष रचा है। (२) शेषकृत वेदांग ज्योतिष। इसके आरम्भ में लिखा है – 'कालज्ञानं प्रवक्ष्यामि लगधस्य महात्मनः' जिससे मालूम होता है कि शेष ने लगधकृत वेदांग ज्योतिष के आधार पर ही अपना वेदांग ज्योतिष रचा। इसकी टीका सोमाकार ने की है। (३) अथर्व ज्योतिष-इस वेदांग ज्योतिष के कर्ता अथर्वन् ऋषि हैं। इसमें कश्यप को ब्रह्मा ने उपदेश किया है। यह एक प्रकार से मुहूर्त्त विषयक है इसमें सात ग्रह और सात वार हैं ।